16 / 04 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सर्वश्रेष्ठ संगमयुगी दरबार देखने का अनुभव

➢➢ फ़रिश्ता रूप रच कर, देह का भान तज कर...

➢➢ चले हैं पार गगन, निराले अपने वतन...

➳ _ ➳ गुनगुनाती पहुँच गई अपनी श्वेत दुनिया में...

➳ _ ➳ अपने बाबा के पास, मिलन मनाने...

→ आज वतन का नजाराअलग ही दिख रहा है...

→ सुंदर सुसज्जित राज्य दरबार...

→ छोटे बड़े अलग अलग सिंहासन...

→ इन सिंहासनों पर आत्मायें आकर बैठती जा रही हैं...

→ हर एक अपने विशेषता रूपी गहनों से सजे हुए...

→ किसी ने ज्यादा गहने पहने हैं किसी ने कम...

→ सबके सिंहासन पर छत्रछाया रूपी छतरी चमक रही है...

→ सब डबल छत्रधारी हैं...

■ राजदरबार धीरे धीरे सुसज्जित होता जा रहा है...

■ बाबा आज मुझे संगमयुगी दरबार का दीदार करवा रहे हैं...

➢➢ फरिश्ते आकर अपना स्थान ग्रहण करते जा रहे हैं...

➳ _ ➳ इससे वतन की चमक और बढ़ गई है...

→ सबके पास एक लाइट का क्राउन है...

→ दूसरे बेहद सेवा का क्राउन...

→ डबल ताजधारी...

→ ताज भी सबके भिन्न भिन्न...

→ किसी का एक छोटा, एक बड़ा...

→ किसी के दोनों ही छोटे...

→ और किसी के दोनों ही बड़े हैं...

■ ताज में चमक भी सबकी अलग अलग है...

➳ _ ➳ सबकी पर्सनेलिटी भी अलग अलग है...

→ किसी की प्यूरिटी की पर्सनेलिटी...

→ किसी की रूहानियत की...

→ किसी की रॉयल्टी की...

→ सबकी पर्सनेलिटी नम्बरवार है...

■ इसी वेराइटी के हिसाब से...

■ पर्सनेलिटी के हिसाब से...

■ सब अपने आप अपने सिंहासनों पर विराजमान होते जा रहे हैं...

■ मैं आत्मा आश्चर्य चकित हो सारा नज़ारा देख रही हूं...

➢➢ संगमयुगी दरबार पूरी तरह रोशन हो गया है...

➳ _ ➳ ये अभी की दरबार ही भविष्य की दरबार है...

→ जन्म-जन्मांतर की दरबार की फाउंडेशन...

→ बाबा अब मुझे अपना स्थान ग्रहण करने का संकेत दे रहे हैं...

→ पर कौन सा स्थान लेना है...

→ अभी यहाँ के लिए स्थान मुझ आत्मा को ही बनाना है...

- इस दृश्य को समझ मैं अग्रसर हूं...
- अपने पद को पाने के पुरषार्थ में...

➳ _ ➳ मैं आत्मा सच्चे दिल से अपनी भविष्य राजधानी में जाने की तैयारी करती हूं...

→ अब मैं अपने कर्मों के प्रति ज्यादा सचेत हूं...

→ बाप के साथ सदा कंबाइंड स्वरूप हूं...

→ इससे स्वतः ही व्यर्थ के प्रभाव से मुक्त होती जा रही हूं...

→ सदा सागर की लहरों से खेलती हूं...

- होली हंस बन गई हूं।
- सदा ज्ञान रत्न धारण करने वाली आत्मा हूं।
- साक्षी दृष्ट बन गयी हूं।
- बाप के कदम पर कदम रख चलने वाली आत्मा बन गयी हूं।
- बाप का राइट हैंड बन सहज प्राप्ति स्वरूप आत्मा हूं।
- बाबा के दिल के सिंहासन पर विराजमान आत्मा हूं।
- बाबा की दिलतख्त नशीन बन मैने सब कुछ पा लिया है।
- संगमयुग पर सर्वश्रेष्ठ पद को हासिल कर लिया है।
- और भविष्य राजाई को भी सुरक्षित कर लिया है।